भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?

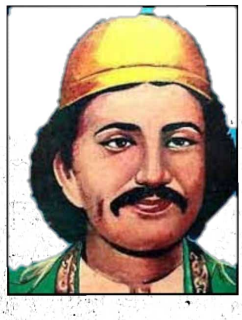

गद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

(1) इस अभागे आलसी देश में जो कुछ हो जाय वही बहुत है। हमारे हिन्दुस्तानी लोग तो 'रेल की गाड़ी हैं। यद्यपि फर्स्ट क्लास सेकेण्ड क्लास आदि गाड़ी बहुत अच्छी और बड़े-बड़े महसूल की इस ट्रेन में लगी है पर बिना इंजिन सब नहीं चल सकतीं, वैसे ही हिन्दुस्तानी लोगों को कोई चलाने वाला हो तो ये क्या नहीं कर सकते। इनसे इतना कह दीजिए "का चुप साधि रहा बलवाना" फिर देखिए हनुमान जी को अपना बल कैसा याद आता है। सो बल कौन याद दिलावै?

Gyansindhu By Arunesh Sir

पाठ 1. भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?

प्र.(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

उ० उपर्युक्त गद्यांश 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' पाठ से लिया गया है जिसके लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

प्र.(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ० -रेखांकित अंश की व्याख्या:-

भारतेन्दु जी कहते हैं कि जैसे रेलगाड़ी में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी के डिब्बे लगे होते हैं और उन्हीं के अनुसार उसका किराया भी अधिक और कम होता है, वैसे ही इस देश में भी निम्न, मध्यम और उत्तम श्रेणी के लोग रहते हैं, किन्तु जिस प्रकार से ये रेलगाड़ियाँ बिना इंजन के नहीं चल सकती, ठीक उसी प्रकार से यहाँ के लोग भी किसी प्रेरक नेता के बिना कुछ नहीं कर पाते। इन्हें कोई अच्छा प्रेरणादायक नेता मिल जाय तो ये सब कुछ कर सकते हैं।

Gyansindhu By Arunesh sir

प्र.(ग) अच्छी से अच्छी ट्रेन किसके बिना चल नहीं सकती?

अच्छी से अच्छी ट्रेन इंजन के बिना चल नहीं सकती।

Gyansindhu By Arunesh sir

प्र(घ)- हिन्दुस्तानी लोगों को किसकी आवश्यकता है?

उ०- हिन्दुस्तानी लोगो को एक अच्छे नेतृत्व की आवश्यकता है।

प्र(ङ)- देश का दुर्भाग्य क्या है?

उ०. हमारे देश के लोग आलसी हैं। यही देश का दुर्भाग्य है।

---

(2) सब उन्नतियों का मूल धर्म है। इसके सबके पहले धर्म की ही उन्नति करनी उचित है। देखो अँगरेजी की धर्मनीति राजनीति परस्पर मिली हैं। इससे उनकी दिन-दिन कैसी उन्नति है। उनको जाने दो, अपने ही यहाँ देखो। तुम्हारे यहाँ धर्म की आड़ में नाना प्रकार की नीति समाज-गठन वैद्यक आदि भरे हुए हैं।

प्र० (क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

उ० - उपयुक्त गद्यांश 'भातवर्षोन्नति कैसे हो सकती है ? पाठ से लिया गया है जिसके लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

प्र०(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ० - रेखांकित अँश की व्याख्या:-
भारतेन्दु जी कहते हैं कि मैं कुछ उन्नति विषयक बातें सुनाता हूँ सुनिये - इस संसार में शारीरिक, मानसिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक जितनी भी उन्नतियाँ हैं उन सब उन्नतियों का मूल है धर्म। धर्मोन्नति पर समस्त उन्नतियाँ टिकी हुई हैं।

प्र० (ग) अंग्रेजों की धर्मनीतियाँ किससे जुड़ी हैं ?

उ० - अंग्रेजों की धर्मनीतियाँ राजनीति से जुड़ी हैं।

प्र० (घ) अंग्रेजों की उन्नति का रहस्य क्या है ?

उ० - अंग्रेजो द्वारा धर्म का प्रचार प्रसार उनकी उन्नति का मुख्य कारण है।

प्र०(ङ) उन्नति के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उ० - उन्नति के लिए हमें धर्मोन्नति करनी चाहिए।

(3) यही तिहवार ही तुम्हारी म्युनिसीपालिटी है। ऐसे सब पर्व सब तीर्थ व्रत आदि में कोई हिकमत है। उन लोगों ने धर्मनीति और समाजनीति को दूध पानी की भाँति मिला दिया है। खराबी जो बीच में भई है वह यंत्र है कि उन लोगों ने ये धर्म क्यों मान लिये थे इसका लोगों ने मतलब नहीं समझा और इन बातों को वास्तविक धर्म मान लिया। भाइयों वास्तविक-धर्म तो केवल परमेश्वर के चरण कमल का भजन है।

Gyansindhu

प्र(ख) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

उ० - उपरोक्त।

प्र(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए -

उ० - लेखक कहता है कि ये दीवाली-होली आदि त्योहार नगरपालिका के समान हैं। जैसे नगरपालिकाएँ नगर की सफाई और प्रकाश आदि का प्रबन्ध करती हैं, वैसे ही इन त्योहारों पर हमारे घरों में विशेष रुप से सफाई की जाती है और प्रकास किया जाता है। इससे हमारे घरों का वातावरण शुद्ध होता है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत हितकर है।

प्र.(ग) हमारे पूर्वजों ने किसे दूध और पानी के समान मिला दिया था ?

उ०. हमारे पूर्वजों ने धर्मनीति और समाजनीति को आपस में दूध और पानी की तरह मिला दिया था।

प्र०(घ) - लेखक के अनुसार समाज में क्या खराबी आ गई ?

उ० - हम धर्म के नियमों और उनके उद्देश्यों को भूल गए इस कारण समाज में खराबी आ गई।

प्र०(ङ.) - वास्तविक धर्म क्या है ?

उ० - परमेश्वर की भक्ति ही वास्तविक धर्म है।

(4) जरा अपने ही को देखो। तुम जिस मारकीन की धोती पहने हो वह अमेरिका की बनी है। जिस लंकलाट का तुम्हारा अंगा है वह इंग्लैण्ड का है। फरासीस की बनी कंघी से तुम सिर झारते हो। और जर्मनी की बनी चरबी की बत्ती तुम्हारे सामने बल रही है। यह तो वही मसल हुई एक बेफिकरे मँगनी का कपड़ा पहन कर किसी महफिल में गये।

प्र० (क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

उ०- उपरोक्त।

प्र०(ख)- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०- रेखांकित अंश की व्याख्या:-

- भारतेन्दु जी कहते हैं हमें आत्म निर्भर बनने हेतु अपने आत्म विश्वास में वृद्धि करना आवश्यक है अन्यथा ऐसा प्रतीत होगा कि मानों हमने अपने उपयोग का वस्त्र भी दूसरे से उधार माँगकर ही पहन रखा हो।

प्र०(ग) गद्यांश का केन्द्रीय भाव क्या है?

उ०- केन्द्रीय भाव:-

हम दूसरों पर निर्भर हो रहे हैं और आत्मनिर्भरता से दूर होते जा रहे हैं।

प्र०(घ) हमारे अन्दर किस बात का अभाव है?

उ०- हमारे अन्दर ज्ञान एवं आत्मविश्वास का अभाव है।

प्र०(ङ.)- बल रही है से क्या आशय है?

उ०- 'बल रही है' का आशय है 'जल रही है' या प्रयोग में लायी जा रही है।